



एक विश्वसनीय समाज का निर्माण

Building a society of trust

The Christian Science Monitor

April 27, 2006

विश्वास पर आधारित एक समाज की रचना—बजाए भय तथा क्रोध के, जो अकसर वर्तमान संसार में इतने प्रबल दिखाई देते हैं — शायद दुर्लभ लगे, किसी तरह का अव्यवहारिक स्वप्न। ऐसे वक्त में जब मासूम लोगों को बंधक बनाया जाता है, जब सरकारी तथा व्यापारी नेताओं पर व्यापक रूप से अविश्वास किया जाता है, यह शायद समझा जा सकता है कि ऐसी घटनाओं के प्रति हमारी पहली प्रतिक्रिया संदेह होती है, अधिक बुराई का अनुमान लगाते हुए।

फिर भी संदेह तथा निराशावाद से बाहर निकलने का एक रास्ता है और यह एक राजनैतिक या आर्थिक मॉडल की अपेक्षा एक आध्यात्मिक मॉडल पर आधारित है। इस तरह के सनकीपन के पीछे एक स्थिरता की पुकार है जो केवल परमेश्वर — अनन्त आत्मा या अन्तश्चेतना — परिपूर्ण कर सकते हैं — एक बेहतर संसार की पुकार, जहाँ मानवता जीसस की आज्ञा "एक दूसरे से प्रेम करो" (यूहन्ना 13:34) का पालन करने के स्वाभाविक झुकाव को एक तरफ न रखे। सनकीपन, खतरे तथा घृणा के बीच, स्वामी क्रिश्चियन ने केवल प्रेम किया और उन्होंने सब को अपने स्वयं के हृदय में स्वर्ग के साम्राज्य, प्रेम के शासन को महसूस करने का आग्रह किया (देखो लूका 17:21)। जीसस ने सिखाया कि जब परमेश्वर का प्रेम इंसानी हृदयों को जीत लेता है, संदेह घुल जाता है, अच्छाई में विश्वास को शक्ति प्रदान करते हुए।

अधिकतर बड़े धार्मिक मत प्रेम को आखिरी लक्ष्य की तरह सिखाते हैं। वे अच्छाई तथा करुणा को व्यवहार में लाने का आवश्यकताओं की तरह आग्रह करते हैं — न कि विलासिता की तरह — मानवजाति के अस्तित्व के लिए। और शुद्ध प्रेम का प्रभाव विश्वास का पोषण करने में है जो कि परमेश्वर के बच्चे होने के नाते हम में से प्रत्येक के लिए स्वाभाविक है। ऐसे समाजों का निर्माण संभव है जहाँ प्रेम का शासन हो। और हर पल उन की रचना करना हमारी व्यक्तिगत तथा सामुहिक जिम्मेदारी है।

"Science and Health with Key to the Scriptures", में मेरी बेकर एडी ने प्रेम के साथ जीने की आवश्यकता को स्पष्ट किया तथा निजी, सहानुभूतिपूर्ण या रंगीले प्रेम की जगह उन्होंने दिव्य प्रेम की शिक्षा दी, जो कि स्वयं परमेश्वर है। जब हम उस प्रेम के निकट जाते हैं तथा उसे अभिव्यक्त करते हैं, हमारे कर्म निस्वार्थ बन जाते हैं तथा वे हमारे स्वयं से परे एक शक्ति के द्वारा सुदृढ़ हो जाते हैं।

अनुभव ने क्रिश्चियन सायेंस (Christian Science) की खोजकर्त्री को यह भी सिखाया कि सोच की कुछ खतरनाक प्रवृत्तियाँ होती हैं जो विश्वास को खोखला कर देती हैं तथा इन्हें नज़र अंदाज़ नहीं करना चाहिए। श्रीमती एडी ने "Science and Health" में इन खतरनाक प्रवृत्तियों का 'पाशिवक आकर्षण' की तरह उल्लेख किया, एक ऐसे शब्द की तरह जो सारी बुराई का उल्लेख करता है (देखो पृष्ठ 484) 'रास्ते जो व्यर्थ हैं' नामक लेख में उन्होंने उस रास्ते के बारे में

चेतावनी दी जिसमें पाशिवक आकर्षण "शक्की अविश्वास को बढ़ावा देता है जहाँ सम्मान उचित हो, भय को जहाँ साहस को सब से ताकतवर होना चाहिए, भरोसे को जहाँ बच कर रहना चाहिए, सुरक्षा के मत को जहाँ सब से अधिक खतरा होता है।" ("The First Church of Christ, Scientist, and Miscellany", पृष्ठ 211).

एक ऐसे संसार का पोषण करने की मदद का व्यक्तिगत संकल्प, हमें कुशलता के नए स्तरों तक ले जा सकता है, जहाँ भय तथा संदेह के द्वारा निर्विरोध, अधिक करुणा जगह ले सकती है। बुराई के दावों का खंडन करने तथा इसकी क्रिया को रोकने का संकल्प, विश्वास पर आधारित एक समाज की रचना करने के लिए अत्यावश्यक है। ऐसा संकल्प हमारे पलों तथा दिनों पर परमेश्वर के नियन्त्रण को मान्यता देने की कर्तव्यनिष्ठ प्रार्थना से आरम्भ हो सकता है। तथा विश्वास करने की उत्परता से कि उसका करुणामयी निर्देशन उसके सभी पुत्रों तथा पुत्रियों के बहुत करीब है।

पाशिवक आकर्षण की प्रवृत्ति के बारे में उसी चेतावनी में से एक प्रार्थना आ सकती है, सम्मान तथा साहस की आवश्यकता पर विचार करने की। हम स्वयं में उसकी अभिव्यक्ति होने के नाते, अच्छाई के प्रत्येक अंश का पोषण कर के परमेश्वर की महानता को सम्मानित कर सकते हैं। तथा हम सरकारी नेताओं तथा दूसरों में दिखाई देने वाली सत्यनिष्ठा तथा दयालुता के कार्यों को मान्यता दे सकते हैं। उन्हें प्रेम करने के लिए साहस की ज़रूरत होती है जिन्हें कुकर्मों के लिए दोषी ठहराया जा चुका हो — बुराई तथा संदेह से मुक्त परमेश्वर की अभिव्यक्तियाँ होने के नाते उनकी मुक्ति को देखने की। तथा हम यह यकीन करने से पूरी तरह इन्कार कर सकते हैं कि कोई भी गलती हानि पहुँचाने में सक्षम है, इसलिये कि यह परमेश्वर की ओर से नहीं है। आखिरकार पीड़ित तथा कष्ट देने वाले दोनों के लिए अंतर्निहित आध्यात्मिकता, ज्ञान तथा अच्छाई का बोध होना आवश्यक है।

यदि किसी मुद्दे पर हम में इस तरीके से प्रार्थना में सहयोग देने के संकल्प में कमी आ जाए, तब श्रीमती एडी की कविता, 'प्रेम' सान्त्वना लाने में मदद कर सकती है तथा दुबारा प्रयास करने की वचनबद्धता को मज़बूत बना सकती है।

यदि तुम से झुका हुआ सरकंडा दूट जाए
कठोर सोच या शब्द से,

प्रार्थना करो कि तुम में उसकी प्रेरणा आ जाए,

जिसने मानवजाति को प्रेम तथा स्वस्थ किया :
पवित्र विचारों और स्वर्गिक खिंचाव को दूढ़ों,

जो इंसानों को प्रेम में एक बनाए रखता है।

(Poems, पृष्ठ 6)

Christian Science Sentinel के एक संपादकीय से रूपांतरित

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे हैं, वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in Hindi, please see <http://translations.christianscience.com>